आपातकाल में सृजन फुलवारी

क्षितिज जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

क्षितिज जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, क्षितिज जैन
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY KCHITIJ JAIN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	आरंभ	6
2.	ओस	7
3.	कहाँ आगे हम जाएँगे	8
4.	चटका! गायन कर	9
5.	दुर्बलता	10
6.	नया भारत	11
7.	नवचेतना का संचार	12
8.	निश्चय	13
9.	यतो धर्मस्ततो जय	14
10.	लड़ना पड़ेगा	15
11.	वीर का प्रयास	16
12.	शकुनि	17
13.	हाथ में है	18
14.	सुख दुख के दिन	19
15.	विवेक	20-21

आरंभ

जहाँ बसती कायरता हृदयों में, अधर्म का वास होता है
वहीं पर शौर्य जन्म लेता, वहीं वीरता का विकास होता है
जो भूखंड प्रचंड वह्नि से धू-धू कर आज देखो! जलता है
वहीं अंकुर वृक्ष का बनकर कोंपल नवीन एक फलता है।

मरूस्थली में ही निराशा की, आशा सरिता अब बहेगी
जो दमित शोषित वंचित प्रजा, क्रान्ति शब्द वही कहेगी
अन्याय के प्रासाद को ही न्याय का चक्रवात सहना होगा
अताताइयों की मूर्तियों को सारी, टूटना और ढहना होगा।

भय के साम्राज्य में ही साहस की प्रखर जयजयकार होती है
विध्वंस के रौरव में ही गुंजित सृजन की नयी झंकार होती है
मानव अपने भीतर की दानवता को सर्वप्रथम आज मारेगा
इस युग के धर्मयुद्ध में, एक बार फिर अनय धर्म से हारेगा।

तमपूर्ण रात्रि की कलिमा के पश्चात, आएगा सूर्य प्रखर
नायक आ कर कोई, पूरा करेगा धर्म का शेष जो समर
स्वाभिमान मानव का दमन के समक्ष नहीं पुन: झुकेगा
हुआ जो आरंभ, यह प्रचंड शंखनाद नहीं कहीं रूकेगा।

शौर्य और पराक्रम मानव का, कबतक रहता है बंधन में?
यह चेतना जो थी सुप्त युगों से, प्रबल हो रही क्षण क्षण में
पुन: कोई एक क्रांतिदूत आकर संदेश यह चतुर्दिक फैलाएगा
लगता है आज कृष्ण कोई फिर से कारावास में ही आएगा।

ओस

प्रकाश आते ही रवि का, ओस हुई विलीन
समस्त गगन मण्डल, हुआ लालिमा के अधीन
हुआ लालिमा के अधीन, यह जगत का सार
क्षणभंगुर और सदा, नश्वर भवति इह संसार
कहे क्षितिज "अनघ" यह, सबका होगा विनाश
शाश्वत सत्य एक ही, आत्मज्ञान का प्रकाश।1

भौतिक संपदाएँ भी, होतीं ओस के समान
यह बात परंतु मानव, नहीं पाया है जान
न पाया है जान, यह सत्य है सदा अटल
जो समझ जाता इसे, उसीका जीवन सफल
कहे क्षितिज "अनघ" इह, ज्ञान यह नहीं लौकिक
ओस समान नश्वर, सब संपदाएँ भौतिक।

यह जीवन एक दिन, विलीन हो जाएगा
ओस समान ही यह, काल में खो जाएगा
काल में खो जाएगा, प्रतिपल यह मिटता
तब भी मोह तेरा, कहाँ जरा भी सिमटता
कहे क्षितिज "अनघ", टटोल थोड़ा अपना मन
ओस समान क्षणभंगुर, तेरा यह जीवन।

घास पर पड़ी ओस, लगती कितनी सुंदर
किन्तु नष्ट कर देता, उसे सूर्य जो प्रखर
उसे सूर्य जो प्रखर, यह लोक का नियम
विनाश पश्चात महल, भी मिट्टी से है कम
कहे क्षितिज "अनघ", यह बात नहीं है बड़ी
मिटता राजपाट भी, यथा ओस घा पर पड़ी।४।

कहाँ आगे हम जाएँगे

जो होता था सिरमौर जगत का
सारे देशों का एकमेव नरेश
आज कहाँ है आ गया पतित हो
हमारा प्यारा महान भारत देश!

कहाँ से कहाँ आ गए हैं हम देखो
कहाँ आगे हम भविष्य में जाएँगे
थी एक विलुप्त जाति भारतीयों की
आगे अध्यापक यही तो नहीं पढ़ाएंगे?

स्वप्न में क्यों हो खोये अभी भी?
सत्य को आँख उठा स्वीकार करो
प्रतीक्षा तो चलेगी अनंत काल तक
अपने हाथों अपना तुम उपकार करो।

अपने देश के उस पुरातन प्राचीन
गौरव को किंचित तो याद करो!
समय शेष है अभी भी देशवासियों!
केवल बैठकर यूं ही न अवसाद करो!

यह कदाचित है अंतिम अवसर ही
जो हमें है आज ऐसा प्राप्त हुआ
अब भी अगर चूके अपनी भूल से
तो समझो कि भारत समाप्त हुआ।

यह प्रत्येक संस्कृति की है कहानी
जिसने पौरुष का पथ अपनाया है
अस्तित्व सुरक्षित रह सका उसीका
उसीने विजय का ध्वज फहराया है।

चटका! गायन कर

मानव कोलहाल से हो गया, रहित यह आकाश
थकित जीवन चक्र से प्रकृति, ले रही है अवकाश
तेरी निर्भीक उड़ान में, अब नहीं रहा कोई गतिरोध
लगाकर ऊर्जा सम्पूर्ण, कर ले सारे नभ का शोध
प्रात: काल की ऊष्मा का, अभिवादन कर!
चटका! मुंडेर पर, उन्मुक्त गायन कर।१।

पाकर एक नए संकट से, अस्तित्व पर संत्रास
बंद घरों में सभ्यता, लेने लगी अपने उच्छ्वास
किन्तु तुझे मिल गया,सुख का स्वर्णिम अवसर
विचरण कर निश्चिंत, सोता मेरा प्यारा शहर
मेरे मन से भी किंचित संभाषण कर!
चटका! मुंडेर पर उन्मुक्त गायन कर।२।

कमरे की खिड़की से,मै पाता जग को केवल निहार
पर तुझे कौनसा भय? तू सबांधव मना त्योहार
तेरे मधुर स्वर को दबाता था,यंत्रों का भारी शोर
आज रंगमंच है तेरे लिए, तेरे हाथ में ही डोर
नभ के साम्राज्य पर अपना शासन कर!
चटका! मुंडेर पर उन्मुक्त गायन कर।३।

तुम निर्दोषों के पीड़न का ही, है यह परिणाम
प्रत्येक दिन मान पर्व तू, प्रकृति ले रही विश्राम
तू भी कर ले कंठ के, पंचम स्वर का विकास
और अपने माधुर्य से, नीरसता में भर उल्लास!
नीड़ निर्माण के एकत्रित, सारे साधन कर
चटका! मुंडेर पर उन्मुक्त गायन कर।४।

दुर्बलता

दुर्बल जो माने स्वयं को, कैसे कर सके उत्थान
कार्य सम्पन्न न करे, जिसे शक्ति का न भान
स्व-शक्ति का भान, सिंह स्वयं को भेड़ ही माने
तो अपने भुजबल को, कैसे वह पहचाने?
कहता क्षितिज "अनघ", यह भ्रांति नहीं है छल
कुछ प्राप्त कर सकता नहीं, मानव जो दुर्बल।१।

हृदय हो दुर्बल तो, मिले न तपस्या में सिद्धि
दुर्बलता से असंभव, यश वैभव तथा समृद्धि
वैभव तथा समृद्धि, करना पड़ता है संग्राम
जीवन रण में आखिर, दुर्बलता का क्या काम?
कहता क्षितिज "अनघ", करता जो सदा भय
पराजित होता जीवन रण, में दुर्बल हृदय।२।

पाप सबसे बड़ा दौर्बल्य यह शास्त्रों का वचन
संबल से ही जिया जाता, यह मानव जीवन
यह मानव जीवन, यह संसार का है सार
दुर्बल व्यक्ति उठाता, कायरता का भार
कहे क्षितिज "अनघ" इह, देती मन को संताप
वह मन की दुर्बलता, सबसे विशाल है पाप।३।

मानव का एक साथी, उसके हिय का आत्मबल
इसके सहारे से वह, सकता जीवन बदल
सकता जीवन बदल, कुछ नहीं कर सके कायर
दुर्बल व्यक्ति दोनों लोक में, कहलाए पामर
कहे क्षितिज "अनघ" इह, सुख है जिससे संभव
उसी संबल से, महान बन सकता है मानव।४।

नया भारत

हे भारत की संततियों! मातृभूमि की पुकार तुम्हें
बुला रहा है आज फिर, जननी का प्यार तुम्हें
बहुत हुई निद्रा, अब जाग्रत होने की है बारी
जला डालो अन्तर्मन के दीपक में चेतना चिंगारी।1।

हम ही हैं भविष्य, हम भारत माँ की वाणी
हम ही अब रचेंगे, नवोत्थान की नयी कहानी
हम ही हैं योद्धा और हम ही होंगे तलवार भी
शंख भी हम और हम ही हैं जयजयकार भी।

तलवार का मोल न होता उसके आकार से
तलवार का मोल होता तय उसकी धार से
भारत देश का तूर्य बजेगा, इस ललकार से
चल पड़ो पथ पर! प्रेरित हो इस उद्गार से।

इन दो हाथों का उपहार दिया है भगवान ने
मन में पुरुषार्थ दिया है, विधि के विधान ने
प्रकृति ने दिये हैं, दो पैर आगे चलने को
और क्या चाहिए, इस संसार को बदलने को?

पहुंचाना होगा जन जब में, जननी के संदेश को
जगाना होगा विश्रांति से, सोये हुए भारत देश को
और जिस दिन यह यज्ञ हमारा पूर्ण हो जाएगा
तभी नया भारत तेजस्वी, जग सम्मुख आएगा।

नवचेतना का संचार

पथ की पीड़ा से पग जिनके, अब हो चुके हैं शिथिल
हृदय की आशाएँ और मन का उत्साह-सब धूमिल!
कहीं बीच में ही बैठ गए जो, पीड़ाओं से थक हार
आज उन म्लान मनों में, करे नवचेतना का संचार!!

विवशता की बेड़ियों से, गये पग हैं जिनके बंध
और निराशा के बोझ से, झुके पड़े दोनों स्कन्ध
भयभीत हो उन शेरों ने, अपना ली भेड़ों की चाल
आज भान करा सिंहत्व का, ऊंचा करें उनका भाल!

दुर्बलता की कालिमा से, कृष्ण हैं जो पीत वदन
उनको दिखाई जाये, संबल की ज्योति नूतन
जिनके लिए हुए भ्रम तथा बोध मानो एकसमान
उन वीरों को करायें, उनके आत्मबल का भान!

उन वीरों की शक्ति को,लील गया विषाक्त अवसाद
अपने ध्येय अथवा पहचान की,नहीं उन्हें कोई याद
कोल्हू के समान जेवन, जो हुआ निस्पंद गतिहीन
उसे चलो करें पुन:, इन दुर्बलताओं से स्वाधीन।

स्फुलिंगों से घबरा जो,संघर्ष पथ से गये हैं भाग
जगायें उनके मन में, आगे के लिए अनुराग
हाथ पकड़ उनका, अपनायें कर्म की यह राह
सर्वत्र भर जाए सुंगंध-सा, संकल्प का नव उत्साह!

निश्चय

निराशा से मुख मोड़कर
बीते हुए को भी छोडकर
पुरानी बातों को निसार
खुद को कर तू तैयार!

पग में शूल ही गड़ा हो
स्वयं अब तू खड़ा हो
क्या जीत और क्या हार
इस सागर को कर पार!

यहाँ केवल तेरे साथ तू
भय की न कर बात तू
हटा कंधों से पीडा भार
बन तू स्वयं का आधार!

टुकड़ों से ही सृजन कर
नयी शक्ति उत्पन्न कर
बाधाओं का कर प्रतिकार
अब तू कर अपना उद्धार!

बढ़! आगे चल! बढ़ता चल
रूकना मत एक भी पल
धर के संकल्प का अंगार
बना ले उसे सहर्ष कंठाहर।

बोल, किसकी है तुझे चाह
कोई न बनाएगा तेरी राह
टूटे मन को कर अंगीकार
यही है वीरत्व का सार!

यतो धर्मस्ततो जय

दिखला कर प्रलोभन अनेकानेक
व लगा कर अपनी संपत्ति प्रचुर
फैला विष अपना अनय जगती में
उत्पन्न करता मानव में से असुर।

निर्दोषों के खून-पसीने से जो पाये
उपयोग में लाकर वे पापी संसाधन
अधर्म करता है उत्पीड़न न्याय का
स्थापित करके अन्याय का कुशासन।

लेकिन सत्य यह भी कि चाहे वह
लगा ले संचित शक्ति अपनी सारी
युगों युगों की गाथा का सार यही
धर्म पड़ा उसपर हर संग्राम में भारी।

धर्मात्मा निरीह पांडव सहोदरों ने
चौदह कठिन वर्ष भी बिताए थे
तब भी क्या कुरुक्षेत्र रणांगन में
क्या सौ कौरव उन्हे हरा पाये थे?

मतिभ्रष्ट दुर्योधन ने पीताम्बर को
निज वास में ससम्मान बुलाया था
तब वासुदेव ने भी मोहक वाणी में
उसे धर्म का यह संदेश सुनाया था।

देख विविध साधन प्रलोभन के
केशव यूं हँसकर बोले दुर्योधन से
धर्म प्रबल जो, पांडवों पर सदय है
और जहाँ धर्म, वहीं जय है।

लड़ना पड़ेगा

चुनौतियों का अंधड़ चल रहा हो चहुंओर
पराजय! पराजय! का मचता हो यह शोर
उस में भी उन्मुक्त पंछी समान उड़ना पड़ेगा
जीवन जीना है यहाँ तो सदा लड़ना पड़ेगा।

प्रचंड ताप से धरती ही यह जल रहीं हों
अथवा चट्टानें भी टूट कर पिघल रहीं हों
सहना होगा मौन रह वह प्रचंड आताप
तब भी रूकेगा नहीं पथिक का पदचाप।

अपने चैन और आराम की इच्छा को भूल
अपनाना होगा सब-प्रतिकूल वा अनुकूल
शीतल सुख छाया से स्वेच्छापूर्वक निकल
कष्टों की जलन में रहना होगा अविचल।

घाव तो सबको मिलते,इसमे नयी बात क्या है?
मन के संकल्प समक्ष हृदय के जज़्बात क्या है?
व्रणों से उठती तीस संग भी आगे बढ़ना पड़ेगा
चाहे जग ही होए विरुद्ध, सबसे लड़ना पड़ेगा।

सफलता वृक्ष से गिरता हुआ फल नहीं है
पा सकता नहीं उसे जिसमे संबल नहीं है
गिरे हुए को यहाँ नहीं उठाता है और कोई
मंज़िल का पथ नहीं दिखाता है और कोई।

अपनी क्षमताओं पर जिन्हें संशय नहीं
परिस्थितियों के मायाजाल का भय नहीं
उन्हें बांधने वाले खूँटों को उखड़ना पड़ेगा
जीतने के लिए मन का संग्राम लड़ना पड़ेगा।

वीर का प्रयास

किस पर कठिनाईयाँ नहीं हैं आती?
कौन उनसे जीवन में है बच पाता?
किन्तु अंतरक्यापड़ा करता वीर को
वह कहाँ उनसे कभी है घबराता?

पुष्प गुलाब के सुंदर व सुकुमार
कंटकों में ही तो सदा खिलतें हैं
फूल पाने से पूर्व इस जग में
काँटें ही इन हाथों को मिलतें हैं।

बिना किये संघर्ष उत्ताल वीचियों से
किसने सागर का तट कभी पाया है?
प्रकाश प्राप्त हो सका सदा उसी को ही
जिसने दीपक एक जलाया है।

चाहे विपदाओं का आ जाए ज्वार
शीश जिसका है कभी झुकता नहीं
पथ में आए जाए चाहे खाइयाँ भी
जो हो हताश बीच में रुकता नहीं।

लक्ष्य उसका स्वयं हो नत सम्मुख
समर्पण कर अपना आता है
और जो रूक जाता देख विपदाओं को
वही बाद में रोता और पछताता है।

शकुनि

चतुर्दिक दिखता मुझे तो
शकुनि का बनाया जाल है
मानव भ्रष्ट हो फंसा हुआ
बुलाता अपना काल है।

चौपड़ पर चलते हैं जो
विनाश के कुटिल पाँसे
खेल मत समझना इसे
गले पर मृत्यु की फाँसे।

पांडव कौरव नहीं इसमे
हिंसा लड़े दोनों ओर से
विजय का तो नहीं पता
मानव हारे दोनों छोर से।

प्रत्येक क्षण के साथ अब
शकुनि है सफल हो रहा
रक्तपात के तांडव से
आकुल धरातल हो रहा।

दुर्योधन नहीं मानव को
आज शकुनि ही मारेगा
जो महाभारत मच रहा है
इसमे मानव मात्र हारेगा।

सुख दुख के दिन

शीत ग्रीष्म है मानो, प्रकृति की ही एक रीत
एक आया करती, तभी दूसरी जाती बीत
दूसरी जाती बीत, यही होता जीवन में
खुशी भी एक क्षण की, दुख आए दूजे क्षण में
कहे क्षितिज "अनघ" यह, दुखों में मत हो भीत
बीत जाएँगे ये भी, बीते जैसे शीत।

सुख दुख में ही जीवन, का सौन्दर्य छिपा है
तभी तो हरेक को, दोनों का भाग मिला है
दोनों का भाग मिला है, यह तो सच्चाई है
किन्तु नादानों के, समझ में ही न आई है
कहे क्षितिज "अनघ", मत मोड़ो इससे अपना मुख
बहादुरी से स्वीकार, करो सुख और दुख।

वीर वही होता जो, कष्टों को भी गले लगाता
कठिनाइयों को भूषण, समझ कर अपनाता
भूषण समझकर अपनाता, न कदापि रोता है
प्रतिकूल समय में भी, हताश नहीं होता है
कहे क्षितिज "अनघ" यही, तैरकर पाता तीर
जीतता है वही, जो बन जाता है वीर।

हार मान के अभीसे, तुम रुक क्यों गए हो?
थोड़े से कष्टों में ही, तुम झुक क्यों गए हो?
झुक क्यों गए हो तुम, पोंछो अब आँसू सारे
तुम वीर हो वीर!, क्यों बनते ऐसे बिचारे?
कहे क्षितिज "अनघ" यह, करो इसी क्षण प्रतिकार
दुख देखकर सामने, मत मानो ऐसे हार।

हाथ में है

बाधाओं की हो ओलावृष्टि चाहे मस्तक पर
किन्तु साहस से शीश उठाना तो हाथ में है!
पथ में आए काँटे-कंकड़ अथवा शूल ही
किन्तु निरंतर पग बढ़ाना तो हाथ में है!

माना कि कोई ज़ोर नहीं विधि की चालों पर
किन्तु दुखों में उत्सव मनाना तो हाथ में है!
मत दे दोष औरों को पीड़ा देने के लिए तू
अपनी पीड़ाओं से जूझ पाना तो हाथ में है!

जीत और हार- ये प्रश्न हो चुके असंगत
इन चुनौतियों से टकराना तो हाथ में है!
गिर पड़ना राह में है बड़ी छोटी-सी बात
लेकिन उठ आगे बढ़ जाना तो हाथ में है!

कई बार हो जाती हैं परिस्थितियाँ प्रबल
पर उनमे संबल दिखाना तो हाथ में है!
हृदय भी हो दुर्बल जाता हताश बहुधा
उस हृदय को समझाना तो हाथ में है!

सबकुछ तमोलीन करता मन का तम
लेकिन खुशी का दीप जलाना तो हाथ में है!
जब पत्थर टूटते- तब बनता महल
खुद ही को मजबूत बनाना तो हाथ में है!

विवेक

विवेक बिना हो न सके, किसी का भी कल्याण
विवेक से ही मिलता, हमें दुखों से अपने त्राण
दुखों से अपने त्राण, कर समझ का उचित प्रयोग
विवेकी करे सफल, बुद्धिपूर्वक किए गए उद्योग
कहे क्षितिज "अनघ" यह, लोकाचार का है सार एक
मानव की प्रतिभा को, सार्थक कर सकता विवेक।

सत्य का साधक विवेक, से ही करे ऊदेश्य प्राप्त
विवेक से ही होता, अनृत का मायाजाल समाप्त
मायाजाल समाप्त, संभव होए सम्यक साधना
विवेकी ही कर सकेगा, सदा सत्य की आराधना
कहे क्षितिज "अनघ" इह, श्री अरहंत का भी कथ्य
स्व-पर विवेक से ही, खोजा जाएगा परम सत्य।

समाप्त करे विवेक, मन के सारे ऊहापोह
तथा हटाये कर्मपथ, के सारे अवरोह
कर्मपथ के अवरोह, दिखाए मार्ग समुचित
विवेकी जन बनता है, सबके लिए प्रेरणा नित
कहे क्षितिज "अनघ", विषमता में राह हो प्राप्त
विवेक से होते, मानव के दुख सारे समाप्त।

आचरण से ही मिलता, समाज में पूरा सम्मान
विवेक से ही महापुरुष, हुए हैं महान
हुए हैं महान, विवेक से ही आचरण रहे शुद्ध
विवेक से जीत लेते थे, परिस्थितियाँ विरुद्ध
कहे क्षितिज "अनघ" यह, मानव मन का आभरण
पूज्य बनाए किसी को भी, विवेक युक्त आचरण।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

क्षितिज जैन

E mail- kshitijjain415@gmail.com

Mobile - 9636407465

सृजन के क्षण अलौकिक होते हैं, रचना धर्म करते समय लेखक अपनी कल्पना से एक नव शक्ति का संचार करता है। सृजन करते समय लेखक न केवल सत्य का उद्घोष करता है अपितु समग्र मानवता का मार्गदर्शन करता है। यह आपातकाल का समय, एक अवसर लेकर आया था प्रत्येक लेखक के लिए जिसका उपयोग कर वह कलम की साधना कर सकता था। यही करने का प्रयास मैंने किया है तथा इन रचनाओं को मूर्त रूप देकर सृजन-धर्म निभाने के साथ साथ कठिनता के इस काल का सदुपयोग किया था। इन रचनाओं में राष्ट्र-चिंतन, मानवीय मूल्यों, वीरत्व के साथ-साथ जीवन की झंकार है जो यदि एक भी पाठक के मन में उजास भर सके, तो मेरा रचना-यज्ञ सार्थक होगा।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-105-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/